150वीं जन्मशती पर

कविगुरू रवीन्द्रनाथ ठाकुर और उनका विश्वभारती

डॉ. ऋषि कुमार

भारतीय सभ्यता-संस्कृति का विकास सिन्धु नदी के किनारे हुआ था जो अत्यन्त ही समृद्ध था। यह बात मोहनजोदड़ों एवं हड़प्पा के सभ्यता से पता चलता है। सभ्यता एवं सांस्कृतिक दृष्टि से भारतवर्ष विश्व का अत्यन्त प्राचीन देश माना जाता है। रोम और मिस्र की प्राचीनतम मानी जाने वाली संस्कृतियों के खण्डहर- विशेष भी इस धरा-धाम से धीरे-धीरे समाप्त होते जा रहे हैं, पर आज भी भारतीय सभ्यता-संस्कृति के भीतर अपनी आन्तरिक ऊर्जा, अपनी कुछ आत्यन्तिक विशेषताएँ ऐसी है कि समय-समय पर प्रयत्न किये जाते रहे हैं फिर भी आज तक इस का कोई बाल भी बाँका नहीं कर सका। इसका सांस्कृतिक पर्यावरण दिन दुगुनी और रात चौगुनी प्रगति एवं विकास करता रहा है और एक सीमा तक आज भी कर रहा है।

इस सभ्यता-संस्कृति को आगे बढ़ाने में अनेक भारतीय मनिषियों का सहयोग भिन्न-भिन्न प्रकार से रहा है। पर कुछ ऐसी भी प्रतिमाएँ होती है जिन्हें देशकाल की सीमा में बाँध कर नहीं रखा जा सकता। बल्कि ऐसी प्रतिभाओं का परिचय विश्व की व्यापकता में ही मिलता है। ऐसे ही व्यक्तित्व के धनी थे गुरूदेव रवीन्द्रनाथ ठाकुर, जो भारत के ही न होकर पूरे विश्व के कवि थे। इनके पिता का नाम देवेन्द्रनाथ एवं देवेन्द्रनाथ के पिता का नाम द्वारकानाथ था। द्वारकानाथ का जन्म जोड़ासांकों के ठाकुरबाड़ी में सन् 1794 में हुआ। इनका विवाह दिगम्बरी देवी के साथ 1809 में हुआ। इसी ठाकुरबाड़ी ने आगे चलकर बंगला साहित्य में अपना विशिष्ट स्थान बनाया। ये बंगला के साथ-साथ अंग्रेजी, अरबी और फारसी भाषा भी जानते थे। पहले वे मैंकिटस कंपनी के लिए रेशम और नील खरीदने में सहायता करते थे। फिर अकेले स्वतंत्र रूप से कार्य करने लगे। इसी के साथ जमींदारी के संचालन में भी अनुभव प्राप्त किया। अपने विशेष अनुभव के कारण बंगाल और बिहार के अनेक जमींदारों के परामर्शदाता हुए। अपने कौशल के बल पर मात्र 29 वर्ष के उम्र में 24 परगना के कलक्टर और 'साल्ट एजेंट' नियुक्त हुए। अपने कड़ी मेहनत से धन एवं शोहरत